Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 05, May. 2025

प्रेम, दारिद्रय और परिवार का समाजशास्त्रीय अध्ययन: 'मृच्छकटिक' और 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के संदर्भ में

[1]डॉ राजेश पासवान *
सह-आचार्य,
(हिंदी) भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली
[2]डॉ. सुभाष कुमार
वरीय सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
बी. एम. डी. कॉलेज, दयालपुर (वैशाली), बिहार

शोध-सार

प्रेम, दारिद्रय और परिवार का समाजशास्त्रीय अध्ययन: 'मृच्छकटिक' और 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के संदर्भ में। इस शोध विषय पर जब मैं ध्यान देता हूँ तो पाता हूँ कि शूद्रक ने 'मृच्छकटिक' नाटक में प्रेम का कारण गुण को माना है तो कालांतर में मोहन राकेश ने 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में प्रेम का कारण भावना को। चारुदत्त की पत्नी को उसकी प्रेमिका अपनी बहन मानती है और उसको अपने से श्रेष्ठ जानती है तो कालांतर में कालिदास की पत्नी उसकी प्रेमिका मल्लिका को दया का पात्र समझकर उसकी शादी करना चाहती है। शूद्रक ने दारिद्रय को सारी मुसीबतों की जड़ माना है तो कालांतर में मोहन राकेश ने भी दारिद्रय को व्यक्ति के सौ-सौ गुणों को नष्ट करने वाला बताया है। इस तरह से दोनों नाटकों में धन की प्रधानता है। इसके अतिरिक्त दोनों ही नाटकों में परिवार और बच्चे को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। शूद्रक के 'मृच्छकटिक' नाटक में वसंतसेना अपने प्रेमी चारुदत्त के परिवार और बच्चा को सँभालती है तो कालांतर में मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में मल्लिका अपने परिवार और बच्ची को सँभालती है। हम जानते हैं कि ये बच्चे ही हमारे भविष्य होते हैं।

Keywords: प्रेम, परिवार, दारिद्रय, वसंतसेना, मल्लिका, चारुदत्त और कालिदास।

प्रस्तावना

इस शोध विषय पर बात करने से पहले दोनों नाटकों के बारे में जानना जरूरी है। हम जानते हैं कि महाकवि शूद्रक 'मृच्छकटिक' नाटक के रचनाकार हैं। सफल नाटककार मोहन राकेश 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के रचनाकार हैं। इस शोध पत्र में दोनों नाटकों में प्रेम, दारिद्रय और परिवार के बारे में जानने का प्रयास किया जाएगा। हम जानते हैं कि नाटक दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यम में होता है। जब हम किसी नाटक को देखते हैं तो उसका जीवन में सीधा प्रभाव पड़ता है। नाटक दृश्य विधा है अर्थात् नाटक को देखा जाता है। जब मैं देखने पर ध्यान देता हूँ तो मुझे हिंदी साहित्य के महत्त्वपूर्ण रचनाकार कबीर याद आते हैं क्योंकी ये आँख से देखी घटना

* Corresponding Author: Dr. Rajesh Paswan
Email: drrajeshpaswan@gmail.com
Received 30 April. 2025; Accepted 19 May. 2025. Available online: 30 May. 2025.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

सत्य के अधिक निकट मानते हैं। इस संदर्भ में तथ्य देखें-

मेरा तेरा मनुवा कैसे एक होई रे।।1।।

मैं कहता हौं आँखन देखी, तू कहता कागद की लेखी।।2।।

मैं कहता सुरझावनहारी, तू राख्यो अरुझाई रे।।3।।

इस काव्य में कबीर बता रहें हैं कि मेरा और तुम्हारा मन एक नहीं हो सकता है क्योंकि मैं आँख से देखकर कोई बात कहता हूँ, लेकिन तुम शास्त्रों एवं पुस्तकों में लिखी बातों को कहते हो। इस काव्य में कबीर यह भी बताते हैं कि मैं कारण-कार्य व्यवस्थानुसार युक्तिपूर्वक सुलझाने वाली बात करता हूँ, परंतु तुम जो छलावा है- महिमा, चमत्कार और सिद्धि की बात करते हो। इस तथ्य को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि कबीर ने आँख से देखकर अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए कहा है। नाटकों को हम सुनते ही नहीं हैं, बल्कि देखते भी हैं क्योंकि नाटक श्रव्य और दृश्य दोनों होते हैं। इस शोध पत्र के दोनों नाटक भी श्रव्य और दृश्य दोनों हैं।

शोध विषय से संबंधित तथ्य: महाकवि शूद्रक 'मृच्छकटिक' नाटक के रचनाकार हैं तो सफल नाटककार मोहन राकेश 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के रचनाकार हैं। 'मृच्छकटिक' मूलतः संस्कृत भाषा का नाटक है तो 'आषाढ़ का एक दिन' हिंदी भाषा का। 'मृच्छकटिक' एक प्राचीन युग का नाटक है तो 'आषाढ़ का एक दिन' आधुनिक युग का। 'मृच्छकटिक' नाटक का नायक चारुदत्त एक व्यापारी और नायीका वसंतसेना एक प्रसिद्ध गणिका है। शूद्रक के 'मृच्छकटिक' नाटक में व्यापारी चारुदत्त और गणिका वसंतसेना की प्रेम कहानी है तो 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का नायक कालिदास एक विद्वान और नायिका मल्लिका सामान्य स्त्री है। मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में विद्वान कालिदास और सामान्य स्त्री मल्लिका की प्रेम कहानी है। इस शोध पत्र का विषय है- प्रेम, दारिद्र्य और परिवार का समाजशास्त्रीय अध्ययन: 'मृच्छकटिक' और 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के संदर्भ में। इस शोध पत्र में प्रेम शब्द पहले है जब मैं प्रेम पर ध्यान देता हूँ तो दोनों ही नाटकों में पाता हूँ जो इस प्रकार है- शूद्रक के नाटक 'मृच्छकटिक' में बताया गया है कि प्रेम का कारण गुण होता है। इस संदर्भ में तथ्य देखें-

वसंतसेना: प्रेम का कारण तो गुण होता है, न कि बलात्कार!

इस तथ्य से ज्ञात होता है कि प्रेम बलात्कार से नहीं, बल्कि गुण से प्राप्त होता है। इसलिए प्रेम पाने के लिए बल का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रेम पाने के लिए अपने अंदर गुण विकसित करना चाहिए। गुण से प्रेम को पाया जा सकता है। मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में भी प्रेम की बात होती है लेकिन यहाँ प्रेम को भावना के रूप में देखा गया है, तभी इस नाटक की नायिका मल्लिका ने अपने जीवन में भावना को महत्त्वपूर्ण माना है। वह कहती है कि मैंने भावना में भावना का वरण किया है। इस संदर्भ में तथ्य देखें- "मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिए वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है...।"

इस उद्धरण में बताया जा रहा है कि मल्लिका ने भावना में भावना का वरण किया है जो पवित्र, कोमल और अनश्वर है। जब हम शूद्रक के नाटक 'मृच्छकटिक' और मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि शूद्रक ने प्रेम का कारण गुण माना है तो मोहन राकेश ने प्रेम का कारण भावना को स्वीकार किया है। वसंतसेना चारुदत्त के गुणों से प्रेम करती है उसके धन से नहीं, तभी कहती है कि इस रत्नावली को मेरी बहन चारुदत्त की पत्नी को दे आ। इस संदर्भ में तथ्य देखें-

"वसंतसेना: ...इस रत्नावली को ले जाकर मेरी बहिन आर्या धूता को दे आ। कहना कि यह दासी वसंतसेना आर्य चारुदत्त के गुणों के वशीभूत है। इसलिए आपके भी बस में है। यह रत्नावली आर्या धूता के गले में ही रहनी चाहिए।"

इस उद्धरण से ज्ञात होता है कि चारुदत्त की प्रेमिका वसंतसेना उसकी पत्नी को अपने से श्रेष्ठ मानती है और उसका सम्मान भी करती है। इसलिए रत्नावली को वापस करती है और कहती है कि यह तो धूता के गले में ही रहनी चाहिए। यहाँ धूता चारुदत्त की पत्नी है। इस उद्धरण में यह भी बताया जा रहा है कि वसंतसेना चारुदत्त के गुणों के वश में है। इस कारण चारुदत्त से जुड़े अन्य लोगों के भी वश में है अर्थात् उसकी पत्नी के भी। इसके ठीक विपरीत मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में कालिदास की पत्नी प्रियंगु उसकी प्रेमिका मल्लिका को दया का पात्र समझती है और उसकी अन्य राज्याधिकारी से शादी कराकर कालिदास के निकट रखना चाहती है क्योंकि कभी-कभी कालिदास अपनी प्रेमिका को याद करने लगता है जिस कारण राजकार्य में रुकावट आ जाती है। इस संदर्भ में तथ्य देखें-

> प्रियंगु: ...मेरे आने से पहले राज्य के दो अधिकारी यहाँ आये थे।...तुमने उन दोनों को देखा है?
>
> मल्लिका: देखा है।
>
> प्रियंगु: तुम उनमें से जिसे भी अपने योग्य समझो,उसी के
>
> साथ तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध किया जा सकता है।

इस उद्धरण से ज्ञात होता है कि विद्वान कालिदास की पत्नी उसकी प्रेमिका मल्लिका की अन्य अधिकारी से शादी कराना चाहती है। यहाँ कालिदास की पत्नी उसकी प्रेमिका को अपने से छोटा समझती है, तभी कहती है कि तुम उन दोनों अधिकारीयों में से जिसे भी पसंद करो शादी हो जाएगी। यहाँ कालिदास की पत्नी उसकी प्रेमिका मल्लिका पर दया दिखा रही है। प्रेमिका दया की नहीं सम्मान की पात्र होती है क्योंकि समाज में प्रेमिका को प्राकृतिक संबंध के रूप में लोग देखते हैं, जबकि पत्नी को सामजिक संबंध के रूप में। इन तथ्यों पर ध्यान देने से पता चलता है कि चारुदत्त की पत्नी को उसकी प्रेमिका अपनी बहन मानती है। इतनाही नहीं उसको अपने से श्रेष्ठ जानती है, जबकि कालिदास की पत्नी उसकी प्रेमिका मल्लिका को दया की पात्र समझकर उसकी शादी अन्य से कराना चाहती है। इस शोध पत्र में प्रेम को जानने के बाद जब मैं दारिद्रय को जानने का प्रयास करता हूँ तो पाता हूँ कि उज्जयिनी नगर में एक निर्धन युवक रहता था- जिसका नाम चारुदत्त था। वह एक व्यापारी भी था। इस संदर्भ में तथ्य देखें-

> राजा शूद्रक के बनाए हुए इस प्रकरण में उज्जयिनी नगरी की कथा है। वहाँ एक व्यापारी ब्राह्मण रहता था। वह युवक था, निर्धन था, उसका नाम था-चारुदत्त।

इस तथ्य से ज्ञात होता है कि उज्जयिनी नगर में चारुदत्त नामक एक व्यापारी रहता था जो युवक और निर्धन था। धन के संबंध में चारुदत्त ने बताया है-

> चारुदत्त: मित्र! सच कहता हूँ। धन गया, मुझे इसकी कोई भी चिन्ता नहीं है, क्योंकि धन का आना-जाना तो भाग्य पर निर्भर है। लेकिन मुझे तो दुःख इस बात का है कि धनहीन हो जाने पर मित्र भी मुँह फेर लेते हैं। गरीबी के कारण लज्जा होने लगती है। लज्जित मनुष्य का तेज नष्ट हो जाता है। और जिसमें तेज नहीं होता, यह संसार उसका तिरस्कार कर देता है। ऐसे समय में मन उचाट हो जाता है, और जब वैराग्य पैदा हो जाता है तब मन को शोक घेर लेता है। मित्र! शोक के उदय से बुद्धि भी

क्षीण हो जाती है और बुद्धि के क्षीण होने पर सर्वनाश घेर लेता है। सच! यह दरिद्रता नहीं है, यह तो सारी मुसीबतों की जड़ है।

इस उद्धरण से ज्ञात होता है कि दारिद्रय जीवन के सभी मुसीबतों की जड़ होती है क्योंकि धनहीन होने पर अपने मित्र भी मुँह फेर लेते हैं अर्थात् साथ देना छोड़ देते हैं। समाज में दारिद्रय व्यक्ति को लोग महत्त्व देना कम कर देते हैं- जिससे व्यक्ति को दुःख होता है, तभी यहाँ दारिद्रय को सभी मुसीबतों का जड़ बताया गया है। दारिद्रय व्यक्ति को समाज में शर्म आने लगती है। दारिद्रय के कारण लोग समाज में अपना बेहतर और सार्थक कार्य करने में असफल हो जाते हैं। इस कारण लोगों के पास धन का होना बहुत जरूरी है, तभी वे अपने जीवन के साथ समाज में आगे बढ़ सकते हैं। ऐसा शूद्रक ने अपने समय में बताया है जो प्राचीन युग था। आज तो आधुनिक युग में भी धन का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि मोहन राकेश ने भी अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन में' धन के महत्त्व को स्वीकार किया है। इस संदर्भ में तथ्य देखें-

तुमने लिखा था
कि एक दोष गुणों के समूह में उसी तरह छिप जाता
है, जैसे चाँद की किरणों में कलंक; परन्तु दारिद्रय नहीं
छिपता। सौ-सौ गुणों में भी नहीं छिपता। नहीं, छिपता
ही नहीं, सौ-सौ गुणों को छा लेता है- एक-एक करके
नष्ट कर देता है।

इस उद्धरण से ज्ञात होता है कि प्रेमिका मल्लिका 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' की पंक्तियाँ भी पढ़ती है, तभी कहती है कि तुमने लिखा है कि 'एक दोष गुणों के समूह में उसी तरह छिप जाता है, जैसे चाँद की किरणों में कलंक; परन्तु दारिद्रय नहीं छिपता। सौ-सौ गुणों में भी नहीं छिपता। नहीं, छिपता ही नहीं, सौ-सौ गुणों को छा लेता है- एक-एक करके नष्ट कर देता है।' यहाँ जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू दारिद्रय को बताया गया है। इस नाटक में मल्लिका ने बताया है कि दारिद्रय सौ-सौ गुणों में भी नहीं छिपता है अर्थात् आप दारिद्रय या गरीब हैं तो आपके अंदर सौ गुण होते हुए भी आप गलत हैं, लेकिन आप धनवान या अमीर हैं तो आपके अंदर हजार अवगुण रहते हुए भी आज के समाज में आप सही माने जायेंगें। दिन-प्रतिदिन ऐसा समाज बनता जा रहा है जिसमें गुण को नहीं, बल्कि धन को महत्त्व दिया जा रहा है। जब मैं दोनों नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन करता हूँ तो पाता हूँ कि दोनों नाटककारों ने अपने-अपने समय में धन के महत्त्व को स्वीकार किया है। शूद्रक ने दारिद्रय को सारी मुसीबतों की जड़ माना है तो कालांतर में मोहन राकेश ने भी दारिद्रय को व्यक्ति के सौ-सौ गुणों को नष्ट करने वाला बताया है। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि 'मृच्छकटिक' और 'आषाढ़ का एक दिन' दोनों ही नाटकों में धन की प्रधानता है। इस शोध पत्र के अंत में प्रेम, दारिद्रय के बारे में जानने के बाद जब मैं परिवार पर विचार करता हूँ तो पाता हूँ कि भारतीय समाज के केंद्र में प्रेम नहीं, बल्कि परिवार है। इस शोध पत्र के दोनों ही नाटकों में परिवार को महत्त्वपूर्ण माना गया है। शूद्रक ने अपने नाटक 'मृच्छकटिक' में परिवार को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है, तभी वसंतसेना ने अपने प्रेमी चारुदत्त के परिवार को सँभालती है। चारुदत्त के हुए बेटे रोहसेन को उसकी मिट्टी की गाड़ी को सोने की गाड़ी बनाकर वसंतसेना ने खुश कर दिया है। इस संदर्भ में तथ्य देखें-

वसंतसेना: पुत्र ! कैसे प्यारे-प्यारे मुँह से ऐसी करुण बात कहता है? (आभूषणों को उतारकर रोती हुई) लो, अब मैं तुम्हारी माता हो गई। इन गहनों को लो और इनसे सोने की गाड़ी बनवा लो।

रोहसेन: नहीं! मैं नहीं लूँगा। तुम तो रो रही हो।

वसंतसेना: (आँसू पोंछकर) वत्स! नहीं रोऊँगी। तुम खेलो। (मिट्टी की गाड़ी गहनों से भरकर) पुत्र! सोने की गाड़ी बनवा लो।

इस उद्धरण से ज्ञात होता है कि वसंतसेना ने अपने प्रेमी के पुत्र को अपना पुत्र मानकर उसके इच्छा को पूर्ण करती है। यहाँ वसंतसेना अपने प्रेमी के परिवार पर माँ की भूमिका को सफलतापूर्वक निभाया है जो उसके व्यक्तित्व को श्रेष्ठ बनाता है। यहाँ यह भी देखते को मिलता है कि वसंतसेना ने अपने प्रेमी चारुदत्त के पुत्र को उसकी मिट्टी की गाड़ी को सोने की गाड़ी बनाने के लिए अपने सभी गहने दे देती है। ऐसा कर वह माँ बन जाती है क्योंकि ऐसा कार्य एक माँ ही अपने पुत्र के लिए कर सकती है। कालांतर में हम ऐसा ही मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में भी देखे हैं। 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में मल्लिका ने भी अपने प्रेमी को छोड़कर अपनी बच्ची के पास चली जाती है और परिवार को संभालती है। इस संदर्भ में तथ्य देखें-

मल्लिका: ... फिर अन्दर से बच्ची के रोने का शब्द सुनायी
देता है। मल्लिका झट से अंदर चली जाती
है।

इस तथ्य से ज्ञात होता है कि मल्लिका अपने बच्ची के साथ परिवार की जिम्मेदारी के कर्तव्य को निभाती है। इन तथ्यों पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि 'मृच्छकटिक' की नायिका वसंतसेना अपने प्रेमी के परिवार को सम्भालती है तो 'आषाढ़ का एक दिन' की नायिका मल्लिका अपने परिवार को सम्भालती है। इस तरह से दोनों नाटकों के केंद्र में प्रेम नहीं, बल्कि परिवार आ जाता है। इसके साथ दोनों ही नाटकों में बच्चे को महत्त्वपूर्ण माना गया है। 'मृच्छकटिक' की नायिका वसंतसेना अपने प्रेमी चारुदत्त के बेटे की 'मिट्टी की गाड़ी' को 'सोने की गाड़ी' बना कर उसको खुश करती है तो 'आषाढ़ का एक दिन' की नायिका मल्लिका भी अपने बच्ची की रोने की आवाज सुन कर उसे सँभालने के लिए बच्ची के पास चली जाती है। हम जानते हैं कि ये बच्चे ही हमारे भविष्य होते हैं।

निष्कर्ष: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस शोध पत्र में तथ्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शूद्रक नें प्रेम का कारण गुण माना है तो कालांतर में मोहन राकेश ने भारतीय समाज में प्रेम का कारण भावना को स्वीकार किया है। शूद्रक ने दारिद्रय को सारी मुसीबतों की जड़ माना है तो कालांतर में मोहन राकेश ने भारतीय समाज में दारिद्रय को व्यक्ति के सौ-सौ गुणों को नष्ट करने वाला बताया है। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर कहा जा सकता है कि 'मृच्छकटिक' और 'आषाढ़ का एक दिन' दोनों ही नाटकों में धन की प्रधानता है। भारतीय समाज के केंद्र में प्रेम नहीं, बल्कि परिवार है क्योंकि शूद्रक के 'मृच्छकटिक' नाटक में वसंतसेना अपने प्रेमी चारुदत्त के परिवार और बच्चा को सँभालती है तो मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में मल्लिका अपने परिवार और बच्ची को सँभालती है। हम जानते हैं कि ये बच्चे ही हमारे भविष्य होते हैं। मेरी दृष्टी में यही है- प्रेम, दारिद्रय और परिवार का समाजशास्त्रीय अध्ययन: 'मृच्छकटिक' और 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के संदर्भ में।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. राकेश, मोहन (2019)। आषाढ़ का एक दिन। राजपाल एण्ड सन्ज़,दिल्ली।

2. दास, अभिलाष (2011)। कबीर की उलटवांसियां। कबीर पारख संस्थान, इलाहबाद (प्रयागराज)।

3. शूद्रक ।(2011)। मृच्छकटिक (रांगेय राघव, अनुवादक)। राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।